International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.5 May – June 2023

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भगत सिंह की क्रान्तिकारी विचारधारा एवं योगदान: एक अध्ययन

डॉ. लाल बाबू

प्रभारी प्रधानाध्यापक,

सरस्वती विद्या निकेतन (आदर्श विद्यालय) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,रुकुंदी जिला–औरंगाबाद, (बिहार)

***Corresponding Author* - डॉ. लाल बाबू**

DOI - 10.5281/zenodo.24244673

सारांश:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल राजनीतिक संघर्षों, आंदोलनों और सत्ता-परिवर्तन की घटनाओं का इतिहास नहीं है, बल्कि यह उन विचारों, आदर्शों और बलिदानों की गाथा भी है, जिन्होंने भारतीय समाज में स्वतंत्रता, समानता और सामाजिक न्याय की चेतना को विकसित किया। इस संघर्ष में भगत सिंह का व्यक्तित्व और योगदान विशेष महत्त्व रखता है। वे केवल एक साहसी क्रान्तिकारी ही नहीं, बल्कि गंभीर चिंतक, प्रखर राष्ट्रवादी, समाजवादी विचारक और सामाजिक परिवर्तन के समर्थक भी थे। उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को एक नई वैचारिक दिशा प्रदान की।

भगत सिंह की क्रान्तिकारी विचारधारा का आधार राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक समानता की स्थापना था। उनका मानना था कि केवल विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त कर लेना ही स्वतंत्रता का अंतिम उद्देश्य नहीं हो सकता, बल्कि एक ऐसे समाज का निर्माण आवश्यक है जिसमें शोषण, अन्याय, जातिगत भेदभाव और आर्थिक असमानता के लिए कोई स्थान न हो। उन्होंने युवाओं को संगठित करने, साम्राज्यवाद का विरोध करने तथा वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोण विकसित करने पर विशेष बल दिया। नौजवान भारत सभा और हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन जैसी क्रान्तिकारी संस्थाओं से उनका जुड़ाव इसी व्यापक दृष्टिकोण का परिचायक है।

प्रस्तुत शोध आलेख में भगत सिंह के जीवन, वैचारिक विकास, क्रान्तिकारी गतिविधियों, समाजवादी दृष्टिकोण, राष्ट्रवादी चेतना तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही, उनके बलिदान के राष्ट्रीय आन्दोलन पर पड़े प्रभाव और समकालीन भारतीय समाज में उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता को भी रेखांकित किया गया है।

प्रमुख शब्द: भगत सिंह, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, क्रान्तिकारी आन्दोलन, राष्ट्रवाद, समाजवाद, साम्राज्यवाद, नौजवान भारत सभा, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन, शहादत, सामाजिक न्याय।

प्रस्तावना:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आधुनिक भारतीय इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं में से एक है। लगभग दो शताब्दियों तक चले ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। अंग्रेजी शासन की शोषणकारी नीतियों, आर्थिक दोहन, राजनीतिक दमन और नस्लीय भेदभाव के विरुद्ध भारतीय समाज में धीरे-धीरे राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। इस चेतना ने विभिन्न रूपों में स्वतंत्रता आन्दोलन को जन्म दिया। कहीं संवैधानिक सुधारों और राजनीतिक याचिकाओं के माध्यम से विरोध व्यक्त किया गया, तो कहीं जन-आन्दोलन, असहयोग, सविनय अवज्ञा और क्रान्तिकारी गतिविधियों के द्वारा औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती दी गई।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में क्रान्तिकारी धारा का विशेष स्थान रहा है। इस धारा से जुड़े युवाओं का विश्वास था कि विदेशी शासन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध, साहस, त्याग और जनजागरण के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में बंगाल, महाराष्ट्र, पंजाब और उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्तिकारी गतिविधियों का विस्तार हुआ। इसी ऐतिहासिक परिस्थिति में भगत सिंह का उदय हुआ, जिन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन को केवल राजनीतिक विरोध तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सामाजिक, आर्थिक और वैचारिक परिवर्तन से जोड़ने का प्रयास किया।

भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन महान व्यक्तित्वों में शामिल हैं, जिनका प्रभाव उनकी अल्पायु से कहीं अधिक व्यापक रहा। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि वास्तविक क्रान्तिकारी केवल परिस्थितियों के विरुद्ध संघर्ष नहीं करता, बल्कि समाज और राष्ट्र के भविष्य के संबंध में एक स्पष्ट दृष्टिकोण भी रखता है। वे ब्रिटिश शासन से भारत की मुक्ति चाहते थे, लेकिन उनकी दृष्टि में स्वतंत्रता का अर्थ केवल सत्ता का हस्तांतरण नहीं था। वे ऐसी व्यवस्था की स्थापना के पक्षधर थे जिसमें मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण समाप्त हो और प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्ण जीवन प्राप्त हो।

भगत सिंह का महत्त्व इस तथ्य में भी निहित है कि उन्होंने क्रान्तिकारी गतिविधियों के साथ-साथ अध्ययन, लेखन, संगठन और वैचारिक बहस को भी अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बनाया। उनके लेखों और वक्तव्यों में साम्राज्यवाद-विरोध, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक चिंतन तथा सामाजिक समानता के विचार स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इसलिए भगत सिंह का अध्ययन केवल एक शहीद क्रान्तिकारी के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक भारत के राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन के एक महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि के रूप में भी किया जाना चाहिए।

भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीय राष्ट्रीय चेतना के विकास के साथ ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राजनीतिक असंतोष भी बढ़ने लगा था। 1857 के विद्रोह ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध व्यापक प्रतिरोध की ऐतिहासिक परंपरा स्थापित की। यद्यपि इस विद्रोह को अंग्रेजों ने दबा दिया, फिर भी इसने भारतीय जनता में विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष की भावना को जीवित रखा।

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद राष्ट्रीय आन्दोलन को एक संगठित राजनीतिक मंच प्राप्त हुआ। प्रारम्भिक दौर में कांग्रेस के नेताओं ने संवैधानिक सुधारों, प्रशासन में भारतीयों की भागीदारी और राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए प्रयास किए। किन्तु समय के साथ यह अनुभव होने लगा कि ब्रिटिश सरकार भारतीयों की राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए इच्छुक नहीं है। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन में उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा का विकास हुआ।

1905 में बंगाल विभाजन ने राष्ट्रीय आन्दोलन को नई दिशा प्रदान की। इसके विरोध में स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन का विस्तार हुआ। बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल और लाला लाजपत राय जैसे नेताओं ने राष्ट्रीय चेतना को व्यापक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी वातावरण में क्रान्तिकारी संगठनों का विकास हुआ। बंगाल में अनुशीलन समिति और युगांतर जैसे संगठनों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्रान्तिकारी गतिविधियों को संगठित किया।

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान तथा उसके बाद राजनीतिक असंतोष और अधिक तीव्र हुआ। गदर आन्दोलन, होमरूल आन्दोलन, रॉलेट एक्ट विरोध और जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड ने भारतीय जनता को ब्रिटिश शासन की दमनकारी प्रकृति से परिचित कराया। विशेष रूप से 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियाँवाला बाग में जनरल डायर के आदेश पर हुई गोलीबारी ने पूरे देश को झकझोर दिया। इस घटना ने अनेक युवाओं के मन में औपनिवेशिक शासन के प्रति गहरा आक्रोश उत्पन्न किया।

बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में क्रान्तिकारी आन्दोलन ने अधिक संगठित और वैचारिक स्वरूप ग्रहण किया। अब इसका उद्देश्य केवल ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध प्रतिशोध लेना नहीं रह गया था, बल्कि एक स्वतंत्र और शोषणमुक्त समाज की स्थापना भी इसके प्रमुख उद्देश्यों में शामिल होने लगी। इसी परिवर्तित ऐतिहासिक परिस्थिति में भगत सिंह ने क्रान्तिकारी आन्दोलन को नई वैचारिक दिशा प्रदान की।

भगत सिंह का जीवन एवं वैचारिक विकास:

भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर 1907 को पंजाब के लायलपुर जिले के बंगा गाँव में हुआ था, जो वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। उनके पिता किशन सिंह तथा चाचा अजीत सिंह और स्वर्ण सिंह राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित थे। परिवार के राजनीतिक

एवं सामाजिक वातावरण ने उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बचपन से ही भगत सिंह के मन में देशभक्ति और स्वतंत्रता की भावना विकसित होने लगी थी। परिवार में प्रचलित राष्ट्रवादी विचारों तथा तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों ने उनके चिंतन को प्रभावित किया। 1919 के जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस घटना ने उनके मन में ब्रिटिश शासन के प्रति विरोध की भावना को और अधिक प्रबल किया।

भगत सिंह की शिक्षा-दीक्षा के दौरान राष्ट्रीय आन्दोलन का वातावरण लगातार बदल रहा था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाए गए असहयोग आन्दोलन ने देश के युवाओं में व्यापक राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न की। किन्तु 1922 में चौरी-चौरा की घटना के बाद आन्दोलन वापस लिए जाने से अनेक युवा निराश हुए। भगत सिंह भी उन युवाओं में शामिल थे, जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए वैकल्पिक राजनीतिक और क्रान्तिकारी मार्ग की आवश्यकता अनुभव की।

उन्होंने लाहौर के नेशनल कॉलेज में अध्ययन किया। इस दौरान उनका सम्पर्क ऐसे युवाओं और विचारकों से हुआ जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता, सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक क्रान्ति के समर्थक थे। इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र और विश्व की क्रान्तिकारी घटनाओं के अध्ययन ने उनके विचारों को व्यापक बनाया।

भगत सिंह ने केवल भावनात्मक देशभक्ति को पर्याप्त नहीं माना, बल्कि राजनीतिक संघर्ष के पीछे स्पष्ट वैचारिक आधार की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने रूसी क्रान्ति, यूरोपीय समाजवादी विचारों, मार्क्सवादी साहित्य तथा विभिन्न राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों का अध्ययन किया। इसी अध्ययन ने उनके चिंतन को अधिक वैज्ञानिक, तार्किक और समाजवादी दिशा प्रदान की।

उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे निरन्तर अध्ययन और आत्मचिन्तन में विश्वास करते थे। जेल में भी उन्होंने अध्ययन और लेखन का क्रम जारी रखा। उनके लेखों से स्पष्ट होता है कि वे स्वतंत्रता को केवल राजनीतिक अधिकार के रूप में नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में देखते थे।

भगत सिंह की क्रान्तिकारी विचारधारा:

भगत सिंह की क्रान्तिकारी विचारधारा भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक उपलब्धि थी। उनकी दृष्टि में क्रान्ति का अर्थ केवल हिंसात्मक कार्रवाई या सत्ता के विरुद्ध विद्रोह नहीं था, बल्कि अन्यायपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था में मूलभूत परिवर्तन लाना था।

उन्होंने अपने विचारों में स्पष्ट किया कि क्रान्ति का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को शोषण और पराधीनता से मुक्त करना है। वे ऐसी व्यवस्था चाहते थे जिसमें समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्राप्त हों

तथा आर्थिक संसाधनों पर कुछ व्यक्तियों या वर्गों का एकाधिकार समाप्त हो।

भगत सिंह की विचारधारा के प्रमुख पक्ष निम्नलिखित हैं—

साम्राज्यवाद का विरोध: भगत सिंह की राजनीतिक चेतना का प्रमुख आधार साम्राज्यवाद-विरोध था। उनके अनुसार ब्रिटिश शासन भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता का हनन करने के साथ-साथ देश की आर्थिक संपदा का भी शोषण कर रहा था। औपनिवेशिक शासन भारतीय जनता के श्रम, संसाधनों और उत्पादन का उपयोग अपने साम्राज्यवादी हितों की पूर्ति के लिए करता था।

वे मानते थे कि साम्राज्यवाद केवल विदेशी शासन की व्यवस्था नहीं, बल्कि शोषण पर आधारित राजनीतिक एवं आर्थिक संरचना है। इसलिए इसके विरुद्ध संघर्ष का उद्देश्य केवल अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालना नहीं, बल्कि शोषण की समस्त व्यवस्थाओं को समाप्त करना भी होना चाहिए।

समाजवादी विचारधारा: भगत सिंह की विचारधारा का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष समाजवाद था। वे राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ आर्थिक समानता की स्थापना को भी आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार यदि स्वतंत्रता के बाद भी समाज में अमीर और गरीब के बीच अत्यधिक अंतर बना रहे तथा श्रमिकों और किसानों का शोषण जारी रहे, तो ऐसी स्वतंत्रता का वास्तविक उद्देश्य अधूरा रह जाएगा।

वे उत्पादन के साधनों पर कुछ पूँजीपतियों के नियंत्रण तथा श्रमिक वर्ग के शोषण के विरोधी थे। उनका विचार था कि समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब श्रमिकों, किसानों और वंचित वर्गों को सामाजिक एवं आर्थिक न्याय प्राप्त हो।

इस प्रकार उनका समाजवाद केवल सैद्धान्तिक अवधारणा नहीं था, बल्कि भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं से जुड़ा हुआ परिवर्तनकारी दृष्टिकोण था।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशीलता:

भगत सिंह की विचारधारा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशीलता का विशेष स्थान था। वे किसी भी विचार, परंपरा अथवा मान्यता को बिना परीक्षण स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे। उनका विश्वास था कि मनुष्य को स्वतंत्र चिंतन, अध्ययन और तर्क के आधार पर अपने विचार विकसित करने चाहिए।

उनका प्रसिद्ध निबन्ध मैं नास्तिक क्यों हूँ उनके बौद्धिक व्यक्तित्व और तार्किक चिंतन का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। इस लेख में उन्होंने ईश्वर, आस्था, मानवीय विवेक और आत्मविश्वास जैसे प्रश्नों पर विचार किया। उन्होंने अंधविश्वास और रूढ़िवादी मानसिकता के स्थान पर वैज्ञानिक चेतना को महत्त्व दिया।

उनके लिए क्रान्ति का अर्थ मानसिक परिवर्तन भी था। वे चाहते थे कि भारतीय समाज भय, अज्ञान, अंधविश्वास और रूढ़ियों से मुक्त होकर विवेकपूर्ण तथा वैज्ञानिक सोच अपनाए।

धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक एकता: भगत सिंह धार्मिक आधार पर समाज को विभाजित करने वाली प्रवृत्तियों के विरोधी थे। उनका मानना था कि साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए गंभीर चुनौती है। वे हिन्दू, मुस्लिम, सिख और अन्य समुदायों के लोगों को एक साझा राष्ट्रीय उद्देश्य के लिए संगठित देखना चाहते थे।

उनके विचार में धर्म व्यक्ति का निजी विषय हो सकता है, लेकिन राष्ट्र और समाज की एकता को धार्मिक भेदभाव के आधार पर कमजोर नहीं किया जाना चाहिए। वे ऐसी राजनीतिक व्यवस्था के समर्थक थे जिसमें प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार और सम्मान प्राप्त हो।

सामाजिक समानता और शोषणमुक्त समाज: भगत सिंह सामाजिक असमानता और जातिगत भेदभाव के विरोधी थे। वे समझते थे कि राजनीतिक स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ तभी पूरा होगा जब समाज के कमजोर, वंचित और श्रमिक वर्गों को भी समान अवसर प्राप्त होंगे।

उनकी दृष्टि में सामाजिक परिवर्तन के बिना राष्ट्रीय मुक्ति अधूरी है। इसलिए उन्होंने सामाजिक न्याय, मानवीय समानता और शोषणमुक्त व्यवस्था को अपने क्रान्तिकारी चिंतन का अभिन्न अंग बनाया।

भगत सिंह एवं क्रान्तिकारी संगठनों की भूमिका:

भगत सिंह के राजनीतिक जीवन में क्रान्तिकारी संगठनों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। उन्होंने यह अनुभव किया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए केवल व्यक्तिगत साहस और बलिदान पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि युवाओं को संगठित करके एक सुदृढ़ राजनीतिक आन्दोलन खड़ा करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से उन्होंने विभिन्न क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लिया और संगठनों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के विस्तार का प्रयास किया।



नौजवान भारत सभा की स्थापना: भगत सिंह ने मार्च 1926 में लाहौर में नौजवान भारत सभा की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाई। इस संगठन का उद्देश्य युवाओं में देशभक्ति, राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक समानता और राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करना था।

नौजवान भारत सभा केवल एक क्रान्तिकारी संगठन नहीं थी, बल्कि यह युवाओं को राजनीतिक एवं सामाजिक प्रश्नों पर शिक्षित करने का एक महत्त्वपूर्ण मंच भी थी। इसके माध्यम से युवाओं को साम्प्रदायिकता, जातिगत भेदभाव और सामाजिक रूढ़ियों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संगठित होने का संदेश दिया गया।

सभा की गतिविधियों में सार्वजनिक सभाएँ, भाषण, प्रचार और राजनीतिक जागरूकता से संबंधित

कार्यक्रम शामिल थे। भगत सिंह का विश्वास था कि स्वतंत्रता आन्दोलन को सफल बनाने के लिए युवाओं की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है। इस संगठन ने पंजाब में राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन: भगत सिंह के क्रान्तिकारी जीवन की एक प्रमुख उपलब्धि हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) से उनका जुड़ाव था। 1924 में स्थापित हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन को 1928 में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला में हुई क्रान्तिकारियों की बैठक के दौरान समाजवादी दिशा प्रदान की गई और इसका नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन रखा गया।

इस संगठन का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन का अंत करके एक स्वतंत्र और समाजवादी गणराज्य की स्थापना करना था। भगत सिंह ने इस संगठन के माध्यम से क्रान्तिकारी आन्दोलन को अधिक स्पष्ट वैचारिक आधार प्रदान करने का प्रयास किया।

इस संगठन के प्रमुख क्रान्तिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु, भगवतीचरण वोहरा, यशपाल तथा अन्य युवा कार्यकर्ता शामिल थे। इन क्रान्तिकारियों ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष को संगठित रूप देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

HSRA की विशेषता यह थी कि उसने क्रान्ति को केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं रखा। उसके कार्यक्रम और विचारों में समाजवादी व्यवस्था, श्रमिकों एवं किसानों के हित तथा सामाजिक-आर्थिक समानता के प्रश्न भी शामिल थे।

लाला लाजपत राय की मृत्यु और सांडर्स वध की घटना: 1928 में ब्रिटिश सरकार द्वारा साइमन कमीशन भारत भेजे जाने के विरोध में देशभर में व्यापक प्रदर्शन हुए। इस कमीशन में किसी भारतीय सदस्य को शामिल नहीं किया गया था, जिसके कारण भारतीय राजनीतिक वर्ग में असंतोष व्याप्त था। पंजाब में लाला लाजपत राय के नेतृत्व में इसका विरोध किया गया।

30 अक्टूबर 1928 को लाहौर में साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने लाठीचार्ज किया। इस घटना में लाला लाजपत राय गंभीर रूप से घायल हो गए। बाद में 17 नवम्बर 1928 को उनका निधन हो गया।

लाला लाजपत राय की मृत्यु ने पूरे देश में आक्रोश उत्पन्न किया। भगत सिंह और उनके साथियों ने इसे ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीति का परिणाम माना। उन्होंने इस घटना का प्रतिशोध लेने का निर्णय किया।

17 दिसम्बर 1928 को भगत सिंह, राजगुरु और उनके सहयोगियों ने लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक जे. पी. सांडर्स की हत्या कर दी। इस घटना में चन्द्रशेखर आजाद ने भी क्रान्तिकारियों की सहायता की। क्रान्तिकारियों का निशाना पुलिस अधिकारी जेम्स ए. स्कॉट था, जिसे लाठीचार्ज के

लिए उत्तरदायी माना गया था, लेकिन पहचान संबंधी भूल के कारण सांडर्स मारा गया।

इस घटना के बाद भगत सिंह और उनके सहयोगियों को पुलिस से बचने के लिए लाहौर छोड़ना पड़ा। इस घटना ने भगत सिंह को देशव्यापी चर्चा का विषय बना दिया तथा ब्रिटिश सरकार ने उनकी गिरफ्तारी के प्रयास तेज कर दिए।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह घटना क्रान्तिकारी आन्दोलन के उस दौर को प्रदर्शित करती है जिसमें औपनिवेशिक दमन के विरुद्ध प्रतिशोधात्मक कार्रवाई को भी संघर्ष का माध्यम बनाया गया था।

केंद्रीय विधानसभा बम काण्ड, 1929: भगत सिंह के क्रान्तिकारी जीवन की सबसे चर्चित घटनाओं में 8 अप्रैल 1929 को दिल्ली की केंद्रीय विधान सभा में बम फेंकने की घटना प्रमुख है। उस समय ब्रिटिश सरकार सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक (Public Safety Bill) और व्यापार विवाद विधेयक (Trade Disputes Bill) जैसे प्रस्तावों के माध्यम से राजनीतिक गतिविधियों तथा श्रमिक संगठनों पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास कर रही थी।

इन विधेयकों के विरोध में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधानसभा में बम फेंकने की योजना बनाई। इसका उद्देश्य किसी व्यक्ति की हत्या करना नहीं, बल्कि औपनिवेशिक शासन की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध राजनीतिक विरोध दर्ज कराना था। इस घटना में प्रयुक्त बमों को इस प्रकार फेंका गया कि व्यापक जनहानि न हो।

बम विस्फोट के बाद दोनों क्रान्तिकारियों ने भागने का प्रयास नहीं किया, बल्कि वहीं रुककर गिरफ्तारी दी। उन्होंने पर्चे वितरित किए और 'इंकलाब जिंदाबाद' तथा 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद' के नारे लगाए।

इस घटना का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार और भारतीय जनता का ध्यान उन राजनीतिक एवं आर्थिक प्रश्नों की ओर आकर्षित करना था, जिन्हें औपनिवेशिक सत्ता दबाने का प्रयास कर रही थी। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने न्यायालय को भी अपने विचार व्यक्त करने का माध्यम बनाया।

इस घटना ने भगत सिंह को राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रसिद्धि दिलाई। अब वे केवल पंजाब के एक क्रान्तिकारी नहीं रह गए थे, बल्कि पूरे देश के युवाओं के लिए संघर्ष और साहस के प्रतीक बन गए थे। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रकाशित ऐतिहासिक सामग्री में भी इस घटना, उसके राजनीतिक उद्देश्य और क्रान्तिकारियों की गिरफ्तारी का उल्लेख मिलता है।

जेल आन्दोलन और राजनीतिक बंदियों के अधिकारों के लिए संघर्ष: गिरफ्तारी के बाद भगत सिंह ने जेल में भारतीय राजनीतिक बंदियों के साथ किए जा रहे भेदभावपूर्ण व्यवहार के विरुद्ध संघर्ष किया। उनका मानना था कि राजनीतिक बंदियों के साथ सामान्य अपराधियों जैसा व्यवहार करना अन्यायपूर्ण है। उन्होंने जेल प्रशासन से भारतीय और यूरोपीय बंदियों के बीच भोजन, वस्त्र, स्वच्छता, अध्ययन तथा अन्य सुविधाओं के मामले में किए जा रहे भेदभाव को समाप्त करने की माँग की।

इस उद्देश्य से भगत सिंह और उनके साथियों ने जेल में भूख हड़ताल प्रारम्भ की। यह आन्दोलन केवल व्यक्तिगत सुविधाओं की माँग नहीं था, बल्कि राजनीतिक बंदियों के सम्मान और अधिकारों से जुड़ा हुआ था।

इस भूख हड़ताल में जतिन दास की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। उन्होंने लम्बे समय तक अनशन किया और 13 सितम्बर 1929 को उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु से पूरे देश में गहरा आक्रोश फैल गया। विभिन्न स्थानों पर सभाएँ आयोजित की गईं और राजनीतिक बंदियों की माँगों के समर्थन में आवाज उठाई गई।

भगत सिंह ने जेल को भी राजनीतिक संघर्ष का एक महत्त्वपूर्ण मंच बना दिया। उन्होंने अपने व्यवहार से यह सिद्ध किया कि क्रान्तिकारी का संघर्ष केवल जेल के बाहर ही नहीं, बल्कि जेल की कठिन परिस्थितियों में भी जारी रह सकता है।

इस आन्दोलन ने भारतीय जनता का ध्यान जेलों में राजनीतिक बंदियों के साथ किए जा रहे अमानवीय व्यवहार की ओर आकर्षित किया। साथ ही इसने राष्ट्रीय आन्दोलन में क्रान्तिकारियों के प्रति जनसमर्थन को भी व्यापक बनाया।

भगत सिंह का लेखन और वैचारिक योगदान:

भगत सिंह का व्यक्तित्व केवल क्रान्तिकारी गतिविधियों तक सीमित नहीं था। वे एक गंभीर पाठक, विचारक और लेखक भी थे। उनके लेखों, पत्रों और जेल में लिखे गए विचारों से उनके राजनीतिक चिंतन की व्यापकता का पता चलता है।

उनके लेखन में भारतीय समाज की समस्याओं, साम्प्रदायिकता, जातिगत भेदभाव, धार्मिक रूढ़ियों, आर्थिक शोषण और औपनिवेशिक शासन की आलोचना प्रमुखता से दिखाई देती है।

'मैं नास्तिक क्यों हूँ': भगत सिंह का प्रसिद्ध लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' उनके बौद्धिक विकास का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। इसे उन्होंने 1930 में जेल में लिखा था। इस लेख में उन्होंने अपने नास्तिक विचारों का तार्किक आधार प्रस्तुत किया तथा स्पष्ट किया कि उनका दृष्टिकोण व्यक्तिगत अहंकार या दिखावे का परिणाम नहीं, बल्कि अध्ययन और विवेकपूर्ण चिंतन पर आधारित था।

इस लेख का व्यापक महत्त्व इस बात में है कि यह स्वतंत्र चिंतन, आत्मविश्वास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। भगत सिंह के लिए मनुष्य की वास्तविक शक्ति उसके विवेक और साहस में निहित थी।

'युवा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम पत्र': भगत सिंह का 2 फरवरी 1931 का लेख 'युवा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम पत्र' उनके राजनीतिक चिंतन का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए केवल भावनात्मक उत्साह पर्याप्त नहीं है। इसके लिए स्पष्ट विचारधारा, अनुशासित संगठन, राजनीतिक शिक्षा और जनता के बीच निरन्तर कार्य करना आवश्यक है।

उन्होंने युवाओं को समाज के वास्तविक प्रश्नों से जुड़ने और व्यापक जनसमर्थन प्राप्त करने की प्रेरणा दी। इस लेख में उनकी क्रान्तिकारी विचारधारा का परिपक्व रूप दिखाई देता है।

अछूत समस्या' और सामाजिक चेतना: भगत सिंह ने भारतीय समाज में व्याप्त अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव के प्रश्न को भी गंभीरता से उठाया। उनके लेख 'अछूत समस्या' में सामाजिक असमानता के प्रति उनकी संवेदनशीलता दिखाई देती है।

वे मानते थे कि जिस समाज में मनुष्य को जन्म के आधार पर छोटा या बड़ा माना जाता है, वह वास्तविक स्वतंत्रता और समानता की स्थापना नहीं कर सकता। उनके अनुसार सामाजिक भेदभाव समाप्त किए बिना राष्ट्रीय एकता मजबूत नहीं हो सकती।

इस प्रकार उनका लेखन राष्ट्रीय स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक सुधार और मानवीय समानता का भी समर्थन करता है। उनके उपलब्ध लेखों और पत्रों का संकलन उनके वैचारिक विकास को समझने का महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

भगत सिंह का क्रान्ति संबंधी दृष्टिकोण:

भगत सिंह के विचारों में क्रान्ति का अर्थ व्यापक सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन था। उन्होंने क्रान्ति को केवल बम और पिस्तौल से जोड़कर देखने का विरोध किया। उनके अनुसार क्रान्ति का वास्तविक उद्देश्य अन्यायपूर्ण व्यवस्था को समाप्त करके न्याय, समानता और स्वतंत्रता पर आधारित समाज का निर्माण करना है।

उनका मानना था कि जब तक समाज में शोषण, गरीबी, आर्थिक असमानता और राजनीतिक पराधीनता बनी रहेगी, तब तक वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए क्रान्ति के लिए जनता की राजनीतिक चेतना और संगठित भागीदारी आवश्यक है।

उनका प्रसिद्ध नारा 'इंकलाब जिंदाबाद' केवल एक राजनीतिक उद्घोष नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की आकांक्षा का प्रतीक बन गया। इस नारे के माध्यम से उन्होंने भारतीय युवाओं को अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने और एक नए समाज के निर्माण के लिए प्रेरित किया।

भगत सिंह की दृष्टि में क्रान्तिकारी का कार्य केवल शासन का विरोध करना नहीं, बल्कि जनता को जागरूक बनाना भी है। वे चाहते थे कि भारतीय समाज में स्वतंत्र चिंतन, वैज्ञानिक चेतना और समानता की भावना विकसित हो।

भगत सिंह की शहादत और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर प्रभाव:

भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को लाहौर षड्यंत्र मामले में ब्रिटिश सरकार द्वारा मृत्युदण्ड दिया गया। 23 मार्च 1931 को लाहौर केंद्रीय कारागार में तीनों क्रान्तिकारियों को फाँसी दे दी गई। उस समय भगत सिंह की आयु मात्र 23 वर्ष थी।

उनकी शहादत ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अभूतपूर्व प्रभाव उत्पन्न किया। देश के विभिन्न भागों में शोक सभाएँ आयोजित की गईं और युवाओं

ने उनके बलिदान को स्वतंत्रता संघर्ष की प्रेरणा के रूप में स्वीकार किया। उनके साहस, त्याग और राष्ट्र के प्रति समर्पण ने भारतीय जनता के मन में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष की भावना को और अधिक प्रबल किया।

भगत सिंह की शहादत का प्रभाव केवल तत्कालीन राजनीतिक वातावरण तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने युवाओं के बीच स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय सम्मान के प्रति नई चेतना उत्पन्न की। उनकी लोकप्रियता ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रान्तिकारी धारा का भी व्यापक जनाधार था।

उनका बलिदान भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की स्मृति का स्थायी हिस्सा बन गया। वे ऐसे क्रान्तिकारी के रूप में प्रतिष्ठित हुए जिन्होंने अपने जीवन के अंतिम क्षण तक अपने आदर्शों से समझौता नहीं किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भगत सिंह का ऐतिहासिक योगदान:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भगत सिंह का योगदान अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन को नई वैचारिक दिशा प्रदान की और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के प्रश्न को सामाजिक तथा आर्थिक समानता से जोड़ा।

उनके योगदान का मूल्यांकन निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता है—

प्रथम, उन्होंने युवाओं को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने का कार्य किया। नौजवान भारत सभा के माध्यम से उन्होंने युवा पीढ़ी में राजनीतिक चेतना और देशभक्ति की भावना विकसित की।

द्वितीय, उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन को समाजवादी दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके लिए स्वतंत्रता का अर्थ केवल विदेशी शासन की समाप्ति नहीं, बल्कि शोषणमुक्त समाज की स्थापना भी था।

तृतीय, उन्होंने साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष को व्यापक वैचारिक आधार दिया। उनके लेखों और वक्तव्यों ने ब्रिटिश शासन की शोषणकारी नीतियों की आलोचना की।

चतुर्थ, उन्होंने भारतीय समाज में साम्प्रदायिकता और जातिगत भेदभाव का विरोध किया। वे राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समानता के समर्थक थे।

पंचम, उन्होंने जेल में भूख हड़ताल के माध्यम से राजनीतिक बंदियों के अधिकारों का प्रश्न उठाया। इससे राष्ट्रीय आन्दोलन में मानवीय गरिमा और नागरिक अधिकारों की चेतना को बल मिला।

षष्ठम, उन्होंने अपने लेखन और अध्ययन के माध्यम से भारतीय युवाओं को स्वतंत्र चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और राजनीतिक शिक्षा का महत्त्व समझाया।

सप्तम, उनकी शहादत ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को नई प्रेरणा प्रदान की। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए त्याग, साहस और देशभक्ति का आदर्श बन गया।

इस प्रकार भगत सिंह का योगदान केवल क्रान्तिकारी गतिविधियों तक सीमित नहीं था। वे

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे विचारक थे जिन्होंने राष्ट्रीय मुक्ति के साथ सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को भी रेखांकित किया।

समकालीन भारत में भगत सिंह की विचारधारा की प्रासंगिकता:

भगत सिंह की विचारधारा आज भी भारतीय समाज और लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण है। उनके विचार केवल औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक समाज की अनेक समस्याओं पर विचार करने की प्रेरणा देते हैं।

आज भी आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, सामाजिक भेदभाव, साम्प्रदायिक तनाव और राजनीतिक जागरूकता की कमी जैसी समस्याएँ विभिन्न रूपों में मौजूद हैं। इन परिस्थितियों में भगत सिंह का समाजवादी और समानतावादी दृष्टिकोण विशेष महत्त्व रखता है।

उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण आज के युवाओं के लिए भी प्रासंगिक है। वे चाहते थे कि व्यक्ति किसी भी विचार को बिना तर्क और विवेक के स्वीकार न करे। वर्तमान समय में शिक्षा, वैज्ञानिक सोच और आलोचनात्मक दृष्टिकोण के विकास के लिए उनके विचार प्रेरणादायक हैं।

भगत सिंह ने धर्म और राजनीति के संबंध में भी एक महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि धार्मिक आधार पर समाज को विभाजित करने से राष्ट्रीय एकता कमजोर होती है। वर्तमान लोकतांत्रिक भारत में धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक सद्भाव और नागरिक समानता की स्थापना के लिए यह दृष्टिकोण विशेष उपयोगी है।

उनका जीवन युवाओं को यह संदेश देता है कि राष्ट्र के प्रति वास्तविक समर्पण केवल नारों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसके लिए अध्ययन, विचार, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व और सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

इस प्रकार भगत सिंह की विचारधारा आधुनिक भारत में सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक चेतना, राष्ट्रीय एकता और मानवीय समानता के मूल्यों को समझने का महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त ऐतिहासिक विवेचन से स्पष्ट होता है कि भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे क्रान्तिकारी व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अपने साहस, त्याग, अध्ययनशीलता और वैचारिक प्रतिबद्धता से राष्ट्रीय आन्दोलन को विशिष्ट दिशा प्रदान की। उनका जीवन केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष और बलिदान की कहानी नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के आदर्शों की स्थापना का भी प्रेरणास्रोत है।

भगत सिंह ने भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन को भावनात्मक राष्ट्रवाद से आगे बढ़ाकर वैचारिक और समाजवादी आधार प्रदान करने का प्रयास किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि राजनीतिक स्वतंत्रता तभी सार्थक हो सकती है, जब उसके साथ आर्थिक शोषण, सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और साम्प्रदायिकता का भी अंत हो। नौजवान भारत सभा

तथा हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के माध्यम से उन्होंने युवाओं को संगठित करने और स्वतंत्रता आन्दोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास किया।

उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियों, जेल आन्दोलन, लेखन और वैचारिक चिंतन ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को व्यापक प्रभाव प्रदान किया। विशेष रूप से 'मैं नास्तिक क्यों हूँ', 'युवा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम पत्र' और 'अछूत समस्या' जैसे लेख उनके बौद्धिक व्यक्तित्व तथा सामाजिक प्रतिबद्धता को अभिव्यक्त करते हैं। इन रचनाओं से स्पष्ट होता है कि वे स्वतंत्रता के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, सामाजिक समानता और मानवीय मूल्यों की स्थापना के पक्षधर थे।

23 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की शहादत भारतीय इतिहास की एक अविस्मरणीय घटना बन गई। उनके बलिदान ने देश की युवा पीढ़ी को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। यद्यपि भगत सिंह स्वतंत्र भारत को अपनी आँखों से नहीं देख सके, फिर भी उनके विचारों और आदर्शों ने भारतीय राष्ट्रीय चेतना पर स्थायी प्रभाव छोड़ा।

अंततः कहा जा सकता है कि भगत सिंह का ऐतिहासिक महत्त्व केवल एक महान शहीद के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रगतिशील राष्ट्रवादी, समाजवादी चिंतक और सामाजिक परिवर्तन के समर्थक के रूप में भी है। उन्होंने जिस स्वतंत्र, समानतामूलक और शोषणमुक्त समाज की कल्पना की थी, वह आज भी भारतीय लोकतंत्र के लिए एक महत्त्वपूर्ण आदर्श है। उनका जीवन और विचार आने वाली पीढ़ियों को यह प्रेरणा देते रहेंगे कि राष्ट्र की वास्तविक उन्नति स्वतंत्रता, समानता, न्याय और मानवीय गरिमा की स्थापना में निहित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. चन्द्र, बिपिन, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, के. एन. पणिक्कर एवं सुचेता महाजन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 1988।
2. लाल, चमन (सम्पादक), भगत सिंह रीडर, नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स, 2019।
3. नायर, कुलदीप, शहीद भगत सिंह : क्रान्ति के प्रयोग, नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स, 2000।
4. सिंह, भगत, मैं नास्तिक क्यों हूँ, मूल लेख, 1930।
5. सिंह, भगत, युवा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम पत्र, 2 फरवरी, 1931।
6. सिंह, भगत, अछूत समस्या, मूल लेख, 1928।
7. सिंह, मनमथ नाथ, भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, नई दिल्ली: प्रकाशन विवरण एवं संस्करण की पुष्टि अपेक्षित।
8. हबीब, एस. इरफान (सम्पादक), इंकलाब : धर्म और क्रान्ति पर भगत सिंह के विचार, नई दिल्ली: लेफ्टवर्ड बुक्स, 2018।
9. एलम, जे. डेनियल, भगत सिंह की नास्तिकता, हिस्ट्री वर्कशॉप जर्नल, खंड 89, 2020, पृष्ठ 109–120।